भूमि-दान-यज्ञ

अहिंसक क्रान्ति का सन्देश

—※—

सुवाणा - सर्वोदय - सम्मेलन
में दिया गया

श्री जयप्रकाश नारायण
का
भाषण

मूल्य डेढ़ आना

राजस्थान भू-दान यज्ञ समिति
जयपुर

प्रकाशक—
राजस्थान भू-दान यज्ञ समिति
किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार,
जयपुर (राजस्थान)

मूल्य
डेढ़ आना

1955

मुद्रक—
युगांतर प्रेस, जयपुर

प्रास्ताविक

राजस्थान सेवक संघ के सुवाना (भीलवाड़ा) में हुये चौथे सालाना जलसे के अवसर पर तारीख ११ अक्टूबर से १८ अक्टूबर १९५३ तक प्रांत के रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का एक शिविर तथा दूसरा प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन भी हुआ था। शिविर के कुलपति वयोवृद्ध गांधीवादी विचारक श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू थे तथा समाप्ति समारोह आदरणीय श्री जयप्रकाश नारायणजी ने सम्पन्न किया था। श्री जयप्रकाश बाबू का भाषण काफी प्रेरणादायी था। भूदान-यज्ञ को आगे बढ़ाने में विभिन्न राजनैतिक संगठनों से संबंधित व्यक्ति भी किस प्रकार योग दे सकते हैं और उस योग दान में उनकी क्या मर्यादाएँ होनी चाहियें – इस महत्व के प्रश्न पर उन्होंने विशेष रूप से प्रकाश डाला था। ऐसे मार्ग दर्शन की आज बड़ी जरूरत है। इसीलिये श्री जयप्रकाश बाबू का वह भाषण पुस्तिका रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

—राजस्थान भू-दान यज्ञ समिति

नहीं समझा है। जो कार्यकर्ता इसमें काम करने वाले हैं वे भिन्न भिन्न विचारों के हैं। कुछ रचनात्मक कार्यकर्ता हैं, कुछ कांग्रेसी हैं, कुछ समाजवादी और कुछ स्वतंत्र भी हैं। उन सबका इसमें थोड़ा बहुत सहयोग मिल रहा है। जहाँ इतने भिन्न २ प्रकार के कार्यकर्ता हों वहाँ मतभेद होना स्वाभाविक है। इसलिए हमारे इस आंदोलन को जो सांस्कृतिक भी है तथा आर्थिक और सामाजिक भी उसे अच्छी तरह समझ लेना जरूरी है। इसे समझने के लिए सबसे बड़ा साधन स्वाध्याय का है। शिविर के साथ स्वाध्याय का समय भी रक्खा गया है। भूदान यज्ञ के बारे में जो साहित्य प्रकाशित हुआ है उसे आप पढें और मनन करें। अक्सर ऐसा होता है कि जो राजनैतिक पार्टियों के पुराने कार्यकर्ता हैं वे एक ढर्रे पर काम करते चले जाते हैं। दिवस मनाना, मेम्बर बनाना, यही मुख्य काम रह जाता है। पढने लिखने तथा विचार करने की ओर उनका इतना ध्यान नहीं होता। पर विनोबाजी ने इस बात पर इतना जोर दिया है कि हमारा मुख्य काम विचार शासन है। विचारों का प्रचार हो उसके लिए उपयुक्त चिंतन भी हो। स्वाध्याय भी हो। मेरा निवेदन है कि आप जो भूदान पत्रिकाएँ निकालते हैं, जिनमें विनोबाजी के प्रवचन छपते हैं, उन्हें पढ़िए। दैनिक पत्र पढ़ना काफी नहीं है। बाज २ अखबारों में तो कुछ का कुछ छप जाता है। बिहार में विनोबाजी जो कुछ कर रहे हैं उसका सारांश भूदान यज्ञ बिहार में छपता रहता है। आप इन पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करें यह मेरी सलाह है।

भूदान यज्ञ किस प्रकार शुरू हुआ इसकी कहानी शायद आप जानते हैं। इसके बारे में विनोवाजी से बातचीत करके जो कुछ मैं समझ पाया हूँ, वह आप से निवेदन कर रहा हूँ। पहला दान पोचमपल्ली में मिला। विनोवाजी को उसी से संकेत मिला। उन्होंने सोचा गाँव २ जाना है, घर २ जाना है और लोगों को विचार समझाना है। उसी दिन उन्होंने यह निश्चय किया। भूदान यज्ञ के भविष्य के विकास की कल्पना उस समय तो इतनी नहीं थी जितनी आज है। धीरे २ अनुभव होता गया और कल्पना बढ़ती गई।

कानून और नया समाज

भूमि का सवाल आज का महान् प्रश्न है। भारत में ही नहीं भूमि की समस्या का हल किसी भी देश में नहीं हुआ है, न यूरोप के देशों में, न रूस में, न अमेरिका में। एशिया में तो हुआ ही नहीं है। भूमि की इस समस्या को हल करने के लिए विनोवाजी ने यह अनोखा साधन रक्खा है। धीरे २ यह आन्दोलन बढ़ता गया है और उसका रूप विकसित हुआ है। भूदान यज्ञ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्रान्ति का जो हल करना चाहते हैं पहिला कदम है। यह आन्दोलन केवल जमीन के सवाल को हल करने के लिए ही नहीं है पर नये समाज की रचना के लिए है। किस प्रकार जनता के हाथों से जनता की शक्ति पैदा करके नीचे से समाज की रचना की जाय उसका यह आन्दोलन है। वह समाज कैसा होगा उसके बारे में आपसे तो अधिक कुछ

नहीं कहना है। आप जानते हैं जिस प्रकार के समाज की कल्पना बापू ने की है उसे हम चाहें रामराज्य कहें या सर्वोदय समाज रचना। आजादी के वाद हमें आशा थी कि महात्माजी की वह कल्पना साकार होगी। समय गुजरता गया और वह कल्पना हमसे दूर होती गई। यह एक चिन्ता का विषय वन गया था, खासतौर से महात्माजी के अनुयायियों के लिए, उनके विचारों में विश्वास करनेवालों के लिए। वे सोचने लगे कि अव क्या करें। पहले तो कुछ लोगों ने सोचा कि सत्ता हमारी है, कानून वनाकर नये समाज का निर्माण कर लेंगे। पर क्या कानून से उस समाज की रचना हो सकती है जिसे हम सर्वोदय कहते हैं? कानून से ऐसे समाज की रचना नहीं हो सकती। कानून और सर्वोदय समाज रचना ये दोनों परस्पर विरोधी वातें हैं। वह समाज जिसे हम सर्वोदय कहते हैं उसमें राज्य का अस्तित्व हो भी तो ऐसा कि व्यक्ति उसको अपने जीवन में अनुभव नहीं करता। राज्य हो ही नहीं तो वहुत अच्छा। आदर्श तो वही है, पर वह समाज राज्य विहीन नहीं तो राज्य निरपेक्ष तो जरूर होगा। इस समाज की कल्पना कैसी है इसका एक अच्छा विवेचन अभी धीरेन्द्र भाई के हाल के भाषण में हमने सुना है। यात्री रेल में सफर करता है तो रेल के हर डिब्बे में खतरे की जंजीर होती है पर आम तौर पर उनका ध्यान जंजीर की तरफ नहीं होता। तव तक वह अपनी यात्रा सुगमता से करता रहता है जव तक कि उसको कोई खास खतरा नहीं हो। पर खतरे के समय वही जंजीर काम देती है। आज

विज्ञान का युग है। विज्ञान के जरिए ऐसा इन्तजाम हो गया है। राज्य का भी एक विज्ञान है जिसमें ऐसे समाज की कल्पना की गई है कि राज्य के अस्तित्व का लोगों को साधारण तौर पर अनुभव ही न हो। जनता अपने हाथों से अपना काम काज चलाती रहे। ऐसी ही कल्पना समाजवाद, मार्क्सवाद और लेनिनवाद में भी की गई है। एंजल्स का सिद्धान्त स्टेटलेस सोसाइटी (Stateless Society) की रचना करना था जिसका लेनिन ने समर्थन किया था और कहा था कि जब कम्यूनिज्म की स्थापना हो जायगी तो स्टेटलैस सोसाइटी हो जायगी। जीवन का सारा प्रबन्ध लोग स्वयं कर लेंगे। गवर्नमेण्ट का कार्य 'गवर्नमेंट" नहीं पर "मैनेजमेन्ट" करना हो यह कल्पना कम्यूनिज्म में भी अन्तिम अवस्था में लागू होनेवाली है। कम्यूनिज्म की यह अन्तिम अवस्था महात्माजी के विचारों से ही आ पायेगी। अगर ऐसा समाज बनाना है जो राज्य निरपेक्ष हो उसका निर्माण हम कानून से करेंगे तो उसका खास तत्व ही मिट जायगा और हम उल्टी दिशा में चले जायेंगे। राज्य के कानून बनेंगे और पालन न होने पर सजा होगी, जेलखाने होंगे। इस प्रकार के डर से राज्य निरपेक्ष समाज का निर्माण हो यह संभव नहीं है। इससे तो उलटा राज्य दिन-ब-दिन बलवान होता जायगा। डिक्टेटरशिप आयगी।

इस तरह का यह प्रश्न आपके और हमारे सामने है कि किस तरह से ऐसे समाज की रचना करें। हम जो यहाँ हैं वे महात्माजी के विचारों को माननेवाले हैं। अब तक हम चख और खादी

के जरिए रचनात्मक कार्य करते आ रहे थे। इसमें विनोबाजी का भूदान यज्ञ आया और संपत्तिदान भी। धीरे २ यह आन्दोलन जमीन की समस्या को हल करने ही नहीं पर नये समाज की रचना करने की आर्थिक क्रान्ति का एक मूल साधन बन गया है। विनोबाजी ने कहा कि समाज को सावधान करना है। उसमें से नई शक्ति निकलेगी। उन्होंने कहा "मैं गाँव २ जाऊँगा, घर २ जाऊँगा। यह भगवान का संकेत है। मेरे पास इतनी शक्ति कहाँ थी सो यह काम उठाता।" जमीन का बंटवारा कैसे हो यह प्रश्न तो पहले भी था। कानून से, हिंसा से, खून खराबी से लोग इसको हल करने में लगे हैं। विनोबाजी तो इन तीनों के द्वारा नहीं करना चाहते थे। उन्हें यह नया रास्ता मिला है। यह हमारी भारत भूमि से प्रकट हुआ है। इससे नई दृष्टि सामने आई है। जो ढंग महात्माजी ने समाज बदलने का बताया था वही तरीका भूदान यज्ञ में बताया जा रहा है। ऐसा नहीं होता तो विनोबाजी इतना नहीं बढ़ते। मान लीजिए कोई मार्क्सवादी होता, मैं होता, लोगों ने जमीन माँगी होती, किसी गरीब हरिजन ने माँगी होती और उसे थोड़ी बहुत जमीन किसी ने दे दी होती तो उससे वह स्थानीय प्रश्न हल हो जाता पर समस्या हल नहीं होती।

हृदय परिवर्त्तन

तो मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि अगर विचारों की इतनी पृष्ठ भूमि नहीं होती तो इतना बड़ा आन्दोलन नहीं चल पाता। भूमिदान यज्ञ उन्हीं तत्वों पर चल रहा है जो महात्माजी

हमारे सामने रख गए हैं। उनकी याद ताजा कर देने के लिए मैं निवेदन कर दूँ कि महात्माजी ने हमारे सामने दो सिद्धान्त रक्खे थे। एक तो यह कि मानव मात्र का हृदय परिवर्तन हो सकता है। चाहे लोभी हो, दुराचारी हो, सवल हो, भ्रष्टाचारी हो। पर चूंकि वह मानव है, उसके हृदय है इसलिए उसका हृदय हम वदल सकते हैं। भारतीय इतिहास में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ बुरा से बुरा आदमी वदला है। हर मनुष्य में करुणा का तत्व मौजूद है। दूसरी वात यह है कि समाज में लोगों के पास जो कुछ भी धन है, संग्रह है, चाहे वह किसी भी प्रकार का हो, बुद्धि का हो, संपत्ति का हो, व्यापार का हो, सामाजिक नियमों के अनुसार वह सव का है, ईश्वर का है, उस व्यक्ति का नहीं है। ये तत्व महात्माजी ने हमारे सामने रक्खे थे। इन्ही दोनों "टैकनिक" पर उन्होंने अहिंसक क्रान्ति की बुनियाद रक्खी थी। आज सामाजिक विषमता, ऊँच नीच, आर्थिक विषमता जातियों के भेद, शोषण यह सव चल रहे हैं। हमें इसको मिटाना है। यदि आपने महात्माजी के लेख पढ़ें हों तो आपको मालूम होगा कि विषमता के खिलाफ कैसी कड़ी और तत्व की वातें उन्होंने कही हैं। वे चाहते थे कि समाज में वरावरी कायम हो। हर व्यक्ति का हिस्सा उसको मिले। एकदम बँटवारा समान न हो तो भी न्यायोचित तो हो।

भू–दान का पहला अध्याय

हमें व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस आदर्श को अपने सामने रखतेहुए उस पर वरावर वढ़ते जाना है। जिसके पास ज्यादा

है उसको समझाना है और यह जाहिर करना है कि जो कुछ उसके पास है वह उसका नहीं, समाज का है। आवश्यकता से जो भी अधिक है वह दूसरों का है, गरीब भाइयों का है, समाज का है। यह भी समझाना है कि जो कुछ तुम्हारे पास है वह वास्तव में तुम्हारा है ही नहीं। आवश्यकता की परिभाषा भी छोड दीजिए। करोड़ों भाई भूखे हैं, नंगे हैं, तब यह उचित नहीं कि आवश्यकताओं को बढावें बल्कि आवश्यकताओं को घटाओ और उनके करीब आजाओ। आज हम देखते हैं कि भूदान यज्ञ का आधार भी यही बनता जा रहा है। भूमि तुम्हारी नहीं, ईश्वर की है। संपत्ति तुम्हारी नहीं, वह समाज की है। कुछ लोगों ने भूदान के बारे में बहस की कि एक आदमी ने दे दिया तो क्या ? कोई मन्दिर के लिए दे दें, कोई तालाब के लिए दे दें। पर यह कैसे संभव है कि करोड़ों भूमिहीनों को इस तरह जमीन मिल जाय। जो काम रामचन्द्र रेड्डी ने किया वह सभी तो नहीं कर सकेंगे। पर धीरे २ उनकी बहस दबती गई। आज लोग देख रहे हैं। इसके महत्व को समझ रहे हैं। देर लगे पर हम अपने मकसद पर अवश्य पहुँचेंगे। आज भी विनोबाजी का यह विश्वास निराधार साबित नहीं हुआ है। देनेवाले हैं पर लेनेवालों की कमी है। बुद्धिमान ही इस काम में नहीं उतर रहा है। कार्यकर्ताओं की कमी है। जमीन मिलने की कोई कठिनाई नहीं हो रही है। २५ लाख एकड़ जमीन मिली तो इससे अधिक भी मिल सकती थी। हमने अधिक काम किया होता, लेते गए होते, काफी कार्यकर्ता

होते तो करोड़ों एकड़ जमीन मिली होती। हमारे देश में ५ लाख गाँव हैं हमको इतने ही कार्यकर्ता चाहिएँ। हर गाँव से लेना है। हर व्यक्ति से लेना है। वह ठीक है कि हमें इस तरह की जमीन मिली है। पड़तल मिली है, रेतीली भी मिली और आवाद भी मिली है। पर यह सब माँगने से ही तो मिली है। भूदान यज्ञ के पहिले लोग यह तो नहीं जानते थे कि देना है। मैं अभी पंजाब गया था वहाँ पहिले ३ हजार एकड़ जमीन मिली थी। बिहार में १२ लाख एकड़ जमीन मिली तो यह बात नहीं है कि बिहार में ज्यादा और पंजाब में कम मिली। पंजाब के लोग बहादुर हैं वे किसी से पीछे नहीं रहते। वे अपनी जान तक हथेली पर रख कर चलते हैं। पर काम इसलिए नहीं हुआ कि लेनेवाला नहीं गया। जब मैं गया तो जाट लोगों ने आकर कहा कि अगर इस तरह जमीन माँगते हैं तो हम सारा घर देने के लिए तैयार हैं पर लाठी के बल पर नहीं। जोर जबरदस्ती से नहीं। अभी तक जो २५ लाख एकड जमीन मिली है वह बाँट भी नहीं सके हैं। इस तरह से यह पहला अध्याय चला है।

महात्माजी का एक तरीका लोकमत बनाने का था वह भी महत्व की बात है। उनसे लोग ट्रस्टीशिप के बारे में पूछा करते थे कि क्या सिर्फ समझने से यह काम हो जायगा। तब वे कहते थे कि अगर समझने से काम नहीं हुआ तो और साधनों की ओर भी ध्यान दूँगा और उनका वह दूसरा साधन था असहयोग। इसी एक टेकनिक से हम अंग्रेजों से लड़ते थे। महात्माजी का

तरीका यह था कि ब्रिटिश साम्राज्य का जो नैतिक आधार था और जिसका वे दावा करते थे कि हिन्दुस्तान के लोग राज्य नहीं चला सकते हैं और वे अंग्रेज इस देश को सभ्य बनाने "सिविलाइज" करने के लिए आये हैं, उसको जड़ से काट देना और उनके इन दावों को "डिमोरेलाइज" कर देना। यह वातावरण बनाना कि यह सब झूँठ हैं। हिन्दुस्तान के लोग राज्य चला सकते हैं, अपना काम सम्भाल सकते हैं। पर आज जो जमींदार लोग हैं उनके पास भूमि है वे इतनी बहस नहीं करते हैं। वे यह भी नहीं अनुभव करते हैं कि यह मेरी है और न यह कहते कि यह मेरे बाप दादों की है। वे समझते हैं कि इतनी जमीन जो हमारे पास है वह अनुचित है। वास्तव में इस लड़ाई में जमींदार लोग हार चुके हैं। विनोबाजी के इस आन्दोलन से ऐसा वातावरण बन गया है कि वे आज इसका विरोध नहीं करते। यह लोकमत का निर्माण हो रहा है।

देने की तैयारी

विनोबाजी ने कहा कि जो छोटे २ जमींदार हैं और आधा एकड़ देना चाहते हैं उनसे भी लो। हर व्यक्ति से लो। कम्यूनिस्टों ने इसका विरोध किया। यहाँ तक कि मीराँ बहिन ने भी दस एकड़ जमीनवाले से कुछ नहीं लेने का कहा। विनोबाजी ने कहा कि हम गरीबों से इसलिए लेते हैं कि इससे उनकी भी आत्म शुद्धि होगी। यह एक सामाजिक शक्ति पैदा करने की बात है। ये जो छोटे २ दान देने वाले हैं वे हमारी सेना के सिपाही हैं। ये

छोटे २ दान भूमि के बंटवारे में एक एक चोट हैं। बिहार में जब विनोबाजी ने प्रवेश किया तो वहाँ भी पहले बहुत ज्यादा जमीन नहीं मिली। यहाँ तक कि कार्यकर्ताओं की गाँठ भी नहीं खुली थी। लोग सक्रिय भाग नहीं लेते थे। विनोबाजी ने हर प्रकार के कार्यकर्ताओं से बात की, समझाया। धीरे २ कार्यकर्ताओं ने कुछ तो समझकर, कुछ ने लाज शर्म से, इसमें भाग लिया फिर तो छोटे २ लोगों ने श्रद्धा से दे दिया। छोटे २ लोग समझते हैं कि हमारे पास जो कुछ भी है उसमें से थोड़ा दे देने से हम गरीब नहीं हो जायेंगे। हमें ईश्वर देगा। इस तरह उन्होंने अपने पर और भगवान पर भरोसा रख कर दिया। उन्होंने कहा हम मेहनत करने वाले हैं। थोड़ी सी जमीन पर ज्यादा मेहनत कर लेंगे। तो आप क्या नहीं मानेंगे कि वे दानी साबित नहीं हुए? वे सबसे बड़े दानी हैं। अगर एक गाँव में छोटी २ हैसियत के लोग दे दें तो बड़ों पर प्रभाव पड़ता है, और वे भी देने के लिए मजबूर हो जाते हैं। एक वातावरण बन जाता है सामाजिक असर का। एक २ विस्वा देने से जमीन तो ज्यादा प्राप्त नहीं होगी पर कंठ २ से आवाज तो निकलेगी ही कि जमीन बंटे जमीन बंटे। यह आवाज वातावरण बदल देगी। हमें इस तरह का वातावरण बनाना है कि लोग देने के लिए मजबूर हो जाएँ। समाज के जीवन में देने की भावना को उतारा जाए। हमने जिस वातावरण का अमल स्वराज्य की लड़ाई के लिए पैदा किया उसी का अमल भूदान के लिए करना है। लोकमत को तैयार कर देना है जिससे हम अपने लक्ष्य पर पहुँचें।

आज यह कहना कठिन है कि आगे हमें क्या कदम उठाना पड़ेगा। विनोबाजी भागलपुर जिले में ८२ दिन से हैं वहाँ उन्हें केवल २२ हजार एकड़ जमीन ही मिली है। पर मैं कह देना चाहता हूँ कि सन् ५७ तक जो ५ करोड़ एकड़ का लक्ष्य हमने बनाया है उतनी जमीन मिलनी ही चाहिए। यह धमकी नहीं है। कार्यकर्ताओं को इस तत्व को समझना है। हम लोग सत्याग्रही हैं। सब्र से काम लेते हैं। पर अनिश्चित समय तक के लिए सब्र नहीं किया जा सकता। हमें विश्वास होजाना चाहिए कि हमने पूरी कोशिश की अपने मकसद पर पहुँचने के लिए पर फिर भी काम पूरा नहीं हुआ तो दूसरा कदम उठाने की बात रह जाती है। और वह क्या हो सकता है यह आप जानते हैं? महात्माजी ने हमको बताया है। वह बड़ा अस्त्र है असहयोग। हम ऐसा वातावरण बना देंगे जिससे गरीब अपना शोषण न होने देंगे। अगर गरीब एक शोषक के साथ सहयोग करता है तो उसका शोषण अवश्य होता है। मिल का मजदूर, खेतीहर मजदूर, किराणी, गुमास्ता, सरकारी क्लर्क, इन सबका शोषण होता है दूसरों के लिए। जितना हम सहयोग से चलते हैं उतना वे अधिक शोषण करते हैं। क्योंकि वहाँ तो सहयोग का तत्व ही शोषण है। महात्माजी ने हमें बताया था कि जब हमें यह पूरा विश्वास हो जाए कि हमने पूरा मौका दिया और फिर भी वे नहीं सम्हले तो हमें अपने सहयोग के हाथ को खींच लेना है। इससे शोषण की प्रथा खत्म हो जायगी और एक नई चेतना पैदा होगी।

दान का अर्थ

पर यह पहली ही अवस्था में नहीं करना है। हम एक तरफ भूमिहीनों को समझाते हैं, दूसरी तरफ भूमि पतियों को भी समझाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि दान की भावना से लोग निष्क्रिय हो जायेंगे। उनका नैतिक पतन हो जायगा। ऐसी बात नहीं है। यह दलील गलत है। अगर एक जमीन देता है तो दूसरा श्रम देता है। जमीन खुद की होने से वह अधिक मेहनत करेगा। स्फूर्ति आयेगी, क्रियाशील होगा। जो हमारी इन बातों को सुनते हैं उनमें जागृति पैदा हो ही रही है। गरीब लोग समझने लग गए हैं कि यह जमीन हमारी है। विनोबाजी ने कहा है कि अगर बड़े २ जमींदार नहीं देते तो कोई बात नहीं। भूमिहीनों को ले आओ और दिखाओ कि लेनेवाले इतने हैं, ये भूमिहीन हैं। इस शक्ति को प्रकट करो, वे देंगे। जो आज शोषित है उनमें जागृति पैदा हो रही है और उनका संगठन हो रहा है। संगठन से समस्या हल होती है। कुछ लोग देंगे। कुछ लोग नहीं देंगे। मान लीजिए एक गाँव में ३० परिवार हैं जिसमें से २० ने जमीन दे दी और १० ने नहीं दी। दूसरी बार भी उन २० वालों ने और दे दी, और उन १० वालों ने कुछ नहीं दी तो खेतों में काम करनेवाला मजदूर समझ जायगा कि जिन भाइयों ने हमारे साथ सहानुभूति की है हम उन्हीं को सहयोग देंगे और उन १० को नहीं देंगे। उन खेतों पर हम क्यों काम करें? हम हल क्यों चलाएँ? उन्होंने असहयोग का नाम नहीं सुना हो पर यह व्यावहारिक बात उनके

समझ में आयेगी और वे असहयोग करेंगे। फिर क्या वे १० नहीं देनेवाले जिन्दा रह सकेंगे? इस तरह की भावना लोगों में पैदा हो रही है। जनमत का दबाव पैदा होता है और इसके अतिरिक्त इन छोटे २ लोगों की सेना तैयार होगी और इस समस्या के हल न होने पर विनोबाजी जो भी कदम उठायेंगे उसका साथ देगी।

वर्ग-संघर्ष

समाजवादी लड़ाइयाँ वर्ग संघर्ष की बुनियाद पर होती है। पर भूमिहीन अपने यहाँ लड़कर नहीं जीत सकता। क्योंकि भूमिहीन ३० फी सदी से ज्यादा नहीं है। पर फिर भी अगर समस्या का हल नहीं हुआ तो भूमिदान आन्दोलन के अन्तिम चरण के रूप में सत्याग्रह होना है। वह अहिंसात्मक संग्राम होगा। राजालोग, जमींदार, उस समय मानेंगे कि विनोबाजी ने जो कुछ कहा वह ठीक है। उस समय ऐसी शक्ति हमारे पीछे है यह अनुभव होना ही काफी होगा। यह युद्ध राम रावण की तरह होगा पर हिंसा से नहीं अहिंसा से अर्थात् सज्जनों और दुर्जनों के बीच। पर इसके पहले हमें उन्हें तात्विक दृष्टि से समझाना है। उन्हें समझाना है कि दुनियां में क्या हो रहा है? जमीन नहीं दोगे तो क्या होगा? तुम क्या पसन्द करोगे कि जमीन तलवार से जाय या शान्ति से? तेलंगाना की रूपरेखा सामने है। विनोबाजी ने कहा है कि जमीन नहीं दोगे तो जमीन छोड़कर चले जाना होगा। लोग कहते हैं विनोबाजी धमकी देते हैं पर वह धमकी नहीं है। वे

वस्तु स्थिति समझा रहे हैं। अगर आप सोये हैं और एक सांप चला आ रहा है और मैं उससे आपको सावधान करता हूँ तो यह डराने की बात है या आपकी रक्षा करने की ?

कार्यकर्ताओं कोसमझना है कि लोग देते हैं। २॥ वर्ष के भूदान आन्दोलन से हम कह सकते हैं कि सन् ५७ तक ५ करोड़ एकड़ मिल सकती है। हम देखते हैं कि लोग जमीन देते हैं। कदम २ ज्यों २ हम आगे बढ़ रहे हैं हमें सहयोग मिल रहा है। पर लेनेवाले कार्यकर्ताओं की कमी है। जो कार्यकर्ता हैं उनमें भी अधिकतर में उत्साह नही है।

बहुत से लोग समझते हैं कि ट्रस्टीशिप का जो विचार है उसमें जान नहीं है। ऐसी बात नहीं है। मेरा तो विश्वास हो गया है कि जिस प्रकार का समाज हम बनाना चाहते हैं वह हिंसा से बन ही नहीं सकता। हम तो जनता के हाथ में आर्थिक और राजनैतिक सत्ता देना चाहते हैं पर जब हिंसा होगी तो उसमें जीत उसी की होगी जिसके पास ताकत ज्यादा होगी। सारी जनता संगठित रूप से कभी हिंसा नहीं कर सकती। लेनिन ने उस जमाने में कहा था कि हम हर व्यक्ति को बन्दूक देंगे। यह संभव नहीं हुआ और न आज संभव है। और फिर आज तो लड़ाई बन्दूक की नहीं है। आज एटम बम का जमाना है। क्या हर व्यक्ति को एटम बम दिया जाय। एटम बम पर खर्च कितना पड़ता है और फिर यह जनता की लड़ाई नहीं होती। रूस में ३६ वर्ष पहले हिंसक क्रान्ति हुई थी। उनका मानना है कि उनका

किसान, मजदूर राज है। पर आज कोई भी ईमानदार आदमी कह नहीं सकता कि वहाँ किसान मजदूर राज है। स्तालिन के देहान्त के बाद तीन आदमी शक्तिशाली थे। मोलनकोव, मोलोटोव, और बेरिया। उसके देहावसान के थोड़े ही दिनों बाद सत्ता की लड़ाई शुरू हुई कि सबसे ज्यादा सत्ता किसके पास रहे। इसमें मोलनकोव की जीत हुई। इसमें जनता से नहीं पूछा गया। जीत उसकी हुई जिसके पास हिंसक शक्ति ज्यादा थीं, बेरिया ने स्तालिन के जमाने से ही वहाँ की पुलिस पर अधिकार जमाया था। एक अपनी प्राईवेट आर्मी 'निजी सेना' तैयार की थी। उधर रूस में एक बड़ी आर्मी थी। सोवियत आर्मी। आर्मी के प्रधान मंत्री के पक्ष में फैसला कर लेने के बाद तुरन्त बेरिया को गिरफ्तार कर लिया गया और न मालूम अब वह जिन्दा भी है या नहीं। यह सब किसान मजदूर की राय से तो नहीं हुआ। रूस की क्रान्ति के ३६ वर्ष बाद भी वहाँ की आज यह स्थिति है। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि जनता के हाथ में सत्ता हिंसा से नहीं अहिंसा से जा सकती है।

संपत्तिदान

भूमिदान के अतिरिक्त संपत्ति दान की शुरूआत हुई है। यह उसका प्रारंभिक रूप है। आपके परिवार में जो खर्च होता है उसका छटा हिस्सा देना। मान लीजिए एक बाप के ५ बेटे हैं। तब तक तो संपति के ५ हिस्से ही होंगे। पर एक बेटा और हो गया तो वह मार तो नहीं देगा। उसका हिस्सा भी तो

देना ही होगा, तो यही समझिए कि गरीब हमारा छठा बेटा है। मैं अभी इसके विस्तृत रूप में नहीं जाना चाहता। यह खुशी की बात है कि यहाँ कार्यकर्त्ताओं ने कुछ हिस्सा देने का निश्चय किया है। आगे के बारे में भी कार्यकर्त्ताओं को और नेताओं को सोचना चाहिये। बुनियादी बात तो महात्माजी कह ही गए हैं। हम तो इन सारी चीजों को एक जामा पहना रहे हैं।

कार्यकर्त्ताओं से मैं चंद शब्द कहना चाहता हूँ। कार्यकर्ता कई तरह के हैं। राजनैतिक हैं, रचनात्मक हैं, सब अपने २ क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं और सभी क्रान्ति की बात करते हैं। लेकिन अगर हम वाकई क्रान्ति करना चाहते हैं तो क्रान्ति फुरसत से नहीं होती। उसके लिए जीवन देना पड़ता है। सर्वस्व वलिदान करना पड़ता है। यह भूदान भी एक क्रान्ति है। खासतौर से उन लोगों के लिए जो महात्माजी के अनुयायी हैं। इसकी यह अहमियत है। उनके लिए यह चुनौती है, गांधीजी के सिद्धान्त के अनुसार समाज निर्माण करने की। आप यह समझें कि पहले अलग २ रचनात्मक कार्यक्रम थे। अठारह सूत्री कार्यक्रम। उनमें भूदान एक और अधिक आगया है, ऐसा नहीं है। यह तो एक ऐसा कार्यक्रम आगया है जिनमें सबका समावेश होजाता है। खादी, ग्रामोद्योग, घाणीका तेल निकालना, आदि जो रचनात्मक कार्यक्रम हैं वे सब सर्वोदय समाज की रचना के कार्यक्रम में समा जाते हैं। सर्वोदय समाज की रचना इस भूदान आन्दोलन के द्वारा ही होगी। बिहार में कई गाँववालों ने सारी जमीन दे दी। वहाँ भूमि का ग्रामीकरण होगया। गोकुल

बन चुका है। यह कहावत चरितार्थ हो गई है कि 'सबै भूमि गोपाल की'। वहाँ काम करने के लिए हमें ऐसे कार्यकर्ता चाहिए जिनका सर्वांगीण विकास हुआ हो। और यही काम हमको सब जगह करना है।

हिंसा का मार्ग

मैं इस समय रचनात्मक क्षेत्र में आया हूँ। इसलिए आपको कुछ अधिक कहने में झिझक भी होती है। पर विनोवाजी ने चाँदिल में कहा था कि हमारे तो दो तरह के धर्म होते हैं। एक नित्य धर्म और एक नैमित्तिक धर्म। आप रोज प्रार्थना करते हैं यह आपका नित्य धर्म है। पर किसी समय प्रार्थना करते समय पास पड़ौस में आग लग गई तो आप उसे बुझाने के लिए प्रार्थना छोड़कर भी दौड़ेंगे क्योंकि वह आपका नैमित्तिक धर्म है। उसी तरह से आपके सामने भूमिदान नैमित्तिक धर्म के रूप में आया है। देश में एक आँधी आई है और वह यह संकेत करती है कि भूमि समस्या अब धीरे २ हल नहीं होगी। इसमें कई वर्ष नहीं लगेंगे। एशिया में जागृति पैदा हो गई है। मैं और कृपलानीजी अभी हाल ही में विनोवाजी से मिले तो उन्होंने कहा कि अगर यह आन्दोलन आगे नहीं बढ़ पाया तो यह कार्यक्रम क्रान्ति का नहीं रहेगा बल्कि एक राहत का काम हो जायगा। अगर आप अहिंसा में विश्वास करते हैं तो यह आपको चुनौती है क्यों कि नहीं तो दूसरे लोग भूमि समस्या को खूनी क्रान्ति द्वारा हल करके दिखा देंगे। तेलंगाना में उन्होंने इस समस्या

को हल किया था। आखिर कम्यूनिस्ट बदमाश नही हैं, गुण्डे नहीं हैं, नौजवान खूनी क्रान्ति का आदर्श लेकर तेलंगाना में गए थे। लूटमार, कत्ल आदि करके एक बार जमीन तो उन्होंने बाँट दी। हालांकि यह गलत था। हम नहीं चाहते कि हिंसा हो क्योंकि इससे जनता का राज नहीं होता। हिंसा होती है तो सबसे पहले मानवता नष्ट होती है। मनुष्य पशु होजाता है और फिर पशु से मनुष्य बनने में लाखों वर्ष लगते हैं। संस्कृति का नाश होजाता है और हिंसा भी ऐसी जो अस्त व्यस्त है। हिंसा का युद्ध भी दो तरह का होता है। एक संगठित और दूसरा असंगठिन। संगठित हिंसा फौज के द्वारा होती है जिसके कानून होते हैं। इससे हर व्यक्ति तो परेशानी में नहीं पड़ता। पर दूसरी असंगठित हिंसा सिविल वार होती है। जहाँ भाई भाई का खून करता है। उसका गला कटता है। हिंदू मुसलमान की इस तरह की हिंसा की लड़ाई से हम अभी गुजरे हैं। हमने देखा है कितनी माताओं की इज्जत लूटी गई। कितने मासूम बच्चों के गले काटे गए। तो यह साफ है कि हमें हिंसा से अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं करना है। हमें मनुष्य का हृदय परिवर्तन करना है।

कानून का मार्ग

कानून से भी सर्वोदय समाज की रचना नहीं हो सकती। कुछ लोग कानून की बात करते हैं। क्रान्ति कभी कानून के द्वारा नहीं आती। क्रान्ति जनता पर लादी नहीं जाती। वह तो नीचे से आती है। जन साधारण से कानून बन गया। ५ हजार एकड़ भूमि नहीं

रख सकते। ठीक है। पर उससे वह इन्सान तो नहीं बदला। उसका हृदय परिवर्तन तो नहीं हुआ। असली क्रान्ति वही है जिसमें जीवन के मूल्य बदल जायँ। चोरी के लिए एक कानून समाज में बना हुआ है। पर मान लीजिए चोरी करना कानून की निगाह से गलत न हो तो क्या हम चोरी करने लगेंगे। परन्तु चोरी करना बुरा है इसलिए हम चोरी नहीं करते हैं। इसी तरह से हमें लोगों को समझाना चाहिए कि पूंजी संग्रह करना एक प्रकार की चोरी है। पूंजी में सबका हिस्सा है क्योंकि जब सबका सहयोग होता है तब पूँजी इकट्ठी होती है। तुम्हारी इस पूँजी की रक्षा के लिए पुलिस हैं, फौज हैं। माल के आवागमन के लिए रेल है आदि २ इन तमाम व्यवस्थाओं पर जो कुछ खर्च होता है उसमें देश के हर नागरिक की मिहनत का हिस्सा है। देखें एक करोड़पति को पूंजी लेकर जंगल में भेज दो। बिना किसी के सहयोग के वह उस पूंजी का कैसे उपयोग करेगा। वह उसको कैसे बढ़ायेगा?

रूस में राजनैतिक सत्ता ही बदली किन्तु आर्थिक असमानता मौजूद है। एक मजदूर कम पाता है और उससे ऊपर का अधिकारी ज्यादा पाता है। वहाँ पर नौकरशाही है ब्यूरोक्रेसी है। व्यक्ति के बदलने का काम कानून से नहीं हो सकता। इसके लिए सर्वोदय ही एक उपयुक्त मार्ग है। भूदान के कार्यकर्ता कानून की अपेक्षा रक्खें तो गलत हैं। लोगों को बिना कानून का अनुभव हुए ही वातावरण बनाना है जिससे वे बदल जाएँ। अगर हम इस तरह से समझें तो हमारे अन्दर से प्रेरणा उठनी चाहिए कि जब

तक इस तरह की व्यवस्था कायम नहीं होगी हम दम नहीं लेगें। हम सोचते हैं विनोबाजी, जाजूजी आदि का दौरा होगया। ये लोग वापस चले गये और अपना काम समाप्त हो गया। हमें यह नहीं सोचना चाहिए। जनता शिथिल नहीं है। वह तो देने के लिए खड़ी है। विचारों की क्रान्ति पैदा कीजिए। फ्रांस में और रूस में क्रान्तियाँ हुई। पहले विचारक पैदा हुए, कवि पैदा हुए, लेखक पैदा हुए तब क्रान्ति हुई। आप इस बात की चिन्ता छोड़ दीजिये कि जमीन मिलती है या नहीं। न मिले एक एकड़, कोई परवाह नहीं। आप प्रचार करते रहिए। जब विचार चारों तरफ फैल जायगा तो आचार तो होनेवाला ही है। जीवन में अन्तः स्फूर्ति या अन्तःआदर्श पैदा होना चाहिए। राज्य का सहयोग मिले तो ठीक है। पर उसके भरोसे न बैठे रहें।

पार्टियों का लाभ ?

प्रजा सोशलिस्ट और कांग्रेस इन दोनों पार्टियों की ओर से अक्सर यह सवाल उठता रहता है कि भूदान आन्दोलन से हमारी पार्टी को क्या लाभ होगा। इस तरह के प्रश्न करनेवालों से हमारा निवेदन है कि पार्टियाँ किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बनी हैं। अगर इस भूदान यज्ञ से उसके उद्देश्य की प्राप्ति हो जाती है तो उनको खुश होना चाहिए। आप जानते हैं कि उस उद्देश्य की पूर्ति इस आन्दोलन द्वारा हो रही है। एक पार्टी करना चाहे तो सबकी शक्ति की अपेक्षा कम काम होगा। उद्देश्य की पूर्ति में देर होगी। अतः सबको मिलकर काम करना चाहिए। उद्देश्य प्राप्त करना चाहते

हैं या मिनिस्टर बनना ? अगर सबके सहयोग से उद्देश्य पूरा होता है तो उसमें रात दिन ताकत लगा देनी चाहिए। हाँ, कोई यह समझे कि यह काम हमारे उद्देश्य से उलटा जाता है तो सह-योग नहीं देना चाहिए। आज तो कम्यूनिस्ट नेता गोपालनजी ने भी इस आन्दोलन का विरोध नहीं करने का ऐलान किया है। यह खुशी की बात है। जब तेलंगाना में विनोबाजी ने यह आन्दोलन शुरू किया था तब कम्यूनिस्ट लोग उन्हें गालियाँ देते थे, धमकियाँ देते थे कि तुम्हें मार दिया जायगा। उन्हें पूँजीपतियों का एजेन्ट कहते थे। मैं यह तो नहीं कह सकता कि उनका हृदय-परिवर्तन होगया है पर फिर भी आज सोशियल प्रेशर व जनमत का दबाव ऐसा पड़ा है कि वे भी कहने लगे हैं कि हम इस काम में रोड़ा नहीं अटकायेंगे।

गांधीजी का जन-आन्दोलन

मैं समाजवादी भाइयों से, जो यहाँ काफी संख्या में दिखाई देते हैं उनसे भी, कहना चाहता हूँ, कि वे गलतफहमी न करें कि जयप्रकाश इसमें कैसे आया। मैं भी इसी तरह की प्रक्रिया में से निकला हूँ। मैं स्वयं मार्क्सवादी था। हम जो मार्क्स-वाद का अर्थ लगाते थे वह स्तालीनवाद से लगाते थे। कांग्रेस में हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ते थे। हमने कांग्रेस के अन्दर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई थी और हम ज्यादातर गांधीजी के विचारों की आलोचना किया करते थे। हम मानते थे कि गांधी तो सुधारवादी हैं, अन्त में हथियार का सहारा लेना ही

पड़ेगा। मैंने स्वयं ने गांधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त की आलोचना की। हम नौजवान थे इसलिए समझते थे कि हम बुद्धिवादी हैं और सबसे आगे हैं। पर जब काम का मौका आता था तो गांधीजी आगे नजर आते थे। हमें उनके पीछे चलना पड़ता था। उस समय कांग्रेस, सोशलिस्ट, रायिस्ट आदि तीन मार्क्सवादी पार्टियाँ थीं। तीनों आलोचना किया करते थे। परन्तु तीनों में कोई भी स्वराज्य की लड़ाई में आगे आये हो ऐसा नही था। हम सबको गांधीजी का ही अनुयायी बनना पड़ता था। हम गांधीवाद का खंडन करते थे पर गांधीजी की बात को मानने के सिवाय कोई चारा नहीं था। आज दिन तक हमने गांधीजी से बढ़कर जन आन्दोलन की रूपरेखा लोगों के सामने नहीं रक्खी। गांधीजी की आँधी में हम सूखी पत्तियों की तरह से उड़ जाते थे। आज आपको उस अनुभव से लाभ उठाना है। मार्क्स जो कुछ कह गया उसके बाद कोई चीज बाकी नहीं रही ऐसी बात नहीं है। हमें अनुभव से अधिक सीखना चाहिए। जबसे समाजवादी पार्टी का जन्म हुआ तब से हमने वर्ग संघर्ष की भावना पैदा की। उसे उत्तेजित किया। पर अब तक २५ लाख एकड़ जमीन इकट्ठी नहीं कर पाये। हमने सन् ३७ से अबतक २५ एकड़ की राहत भी शायद ही लोगों को पहुँचाई हो। तो यह स्पष्ट है कि आज जो भूदान का आन्दोलन चला है वह ज्यादा महत्व का है। अगर हम सबने मिलकर इस काम को किया होता तो न मालूम आज कितना काम होगया होता। हम शोषण और

अन्याय की प्रथा उठाना चाहते हैं। वर्ग विहीन समाज की रचना करना चाहते हैं तो वर्ग भावना को उत्तेजित करके यह नहीं कर सकेंगे। बल्कि काम करके हमें अपने विचारों में परिवर्तन करना चाहिए। उसमें नम्रता लानी चाहिए। अनुभव से कुछ सीखना चाहिए। आँधी में सूखी पत्तियों की तरह नहीं उड़ना चाहिए। उड़ना ही है तो चिड़िया के समान अपने बल पर उड़ना चाहिए। इस आन्दोलन में कुछ भी कमजोरी है तो हमारी है। परिस्थितियाँ तो सारी अनुकूल हैं। इतिहास आपके साथ है फिर कमी किसकी है। कमी सिर्फ हमारी है। कार्यकर्ताओं की है। उनमें जोश क्यों नहीं आता है। हम लोग अपनी २ पार्टी की बात सोचते हैं कि सन् ५७ का चुनाव होगा तो क्या होगा? पर हम तो उस चुनाव के पहले ही इस समस्या को हल कर देना चाहते हैं। फिर चुनाव में फैसला किस बात का होगा? पर लोग सोचते हैं कि हम वैधानिक ढंग से चुनाव जीत कर असेम्बलियों में जायेंगे और फिर कानून बनाकर क्रान्ति लायेंगे। ऐसा सोचते हैं परन्तु लोगों की माँग तो आज की है। उसे तो तत्काल ही पूरी करना है अतः आज हम ज्यादा से ज्यादा जमीन लावें यही बड़ी क्रान्ति है। लोगों की माँग तत्काल पूरी करो। जमीन बटेंगी, साधन बटेंगी, खेती होगी। नया समाज बनेगा फिर सन् ५७ के चुनावों की फिक्र क्या है? कम्यूनिस्टों ने तो तेलंगाना में यह सौदा नहीं किया था कि तुम हमें वोट देना हम तुमको जमीन देंगे। हमें तो आज समस्या को हल करना है। कोई सौदेबाजी करके नहीं, पर वास्तविक रूप से।

सज्जन बनाम दुर्जन

जैसा विनोबाजी कहते हैं, अगर यह आन्दोलन सन् ५७ तक सफल हो जाता है तो देश में दो ही पार्टियाँ रह जावेंगी। एक सज्जनों की और दूसरी दुर्जनों की। पार्टी की आवश्यकता जब कोई आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन करना होता है तब होती है। पर आज विनोबाजी गांधीजी के विचारों पर चल कर आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को दूर करने की जो बड़ी क्रान्ति कर रहे हैं वह किसी पार्टी विशेष द्वारा नहीं। यह तो सर्वदलीय प्रयास है। यदि इस ढंग से नये समाज की रचना होजाय तो फिर पार्टियों की आवश्यकता ही नहीं है। हमें गाँव गाँव में शक्ति पैदा करनी है। पर यदि गाँवों की पंचायतों में पार्टियाँ हो गई तो गाँवों का खात्मा ही समझो। हमें गाँवों के जीवन में पार्टीबाजी नहीं लाना है। अगर हम लोग थोड़ी संकीर्णता जो हम में है उससे ऊपर उठने की कोशिश करें और नम्रता के साथ पक्षभेद पीछे रख कर एकरस होकर काम करें तो अवश्य सफल होंगे।

भू-दान यज्ञ साहित्य

१. अहिंसक क्रांति की पावन-वाणी
२. विनोबा का भू-दान आंदोलन (प्रश्नोत्तरी)
३. सर्वोदय का घोषणा-पत्र : विनोबा
४. सर्वोदय सेवकों से : विनोबा
५. सर्वोदय का विचार : विनोबा
६. भू-दान यज्ञ की भूमिका : शंकररावदेव
७. भू-दान यज्ञ : विनोबा
८. संत विनोबा और भू-दान यज्ञ
९. युग की महान चुनौती : धीरेन्द्र मजूमदार
१०. मानवीय क्रांति : दादा धर्माधिकारी
११. सम्पत्ति दान यज्ञ : श्रीकृष्णदास जाजू
१२. धरती की पुकार : दुखायल
१३. राजधानी की संनिधि में : विनोबा
१४. क्रांति का अगला कदम : दादा धर्माधिकारी